SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

# शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का विद्यार्थियों पर प्रभाव

डॉ सरोज चौधरी, उप प्राचार्या, विवेक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कालवाड़, जयपुर, राजस्थान

## सारांष

आधुनिक युग में शिक्षकों की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि वे छात्रों को न केवल ज्ञान देते हैं, बल्कि उन्हें जीवन में जरूरी कौशल भी सिखाते हैं। शिक्षक छात्रों के साथ सहयोग करते हुए उन्हें नैतिक मूल्यों के बारे में भी समझाते हैं जो एक अच्छे नागरिक के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं। चूँकि एक षिक्षक छात्र के व्यवहार को आकार देता है, अतः देष को भावात्मक रूप से मजबूत व संतुलित बनाने के लिए यह आवष्यक है कि षिक्षक भी संवेगात्मक रूप से सुदृढ़ हो। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला षिक्षक ही अपने छात्रों के संवेगों की अनुभूति करने, प्रयोग करने, पहचानने, सीखने एवं समझने की आंतरिक षक्ति को विकसित कर उज्ज्वल सुदृढ़ भविष्य हेतु योग्य बना सकता है।

**मुख्य षब्द : संवेगात्मक बुद्धि, षिक्षक दक्षता,**

### प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, अध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान करने की योग्यता धारण करता है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल जाता है, उसी प्रकार पशु समान मानव भी शिक्षा के प्रकाश से अपने भविष्य को उज्जवल तथा प्रकाशमय बनाता है। जिसके पश्चात् उसकी कीर्ति दूर–दूर तक फैली रहती है। शिक्षा एक ओर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है जिससे व्यक्ति की उन्नति तथा प्रगति होती है। वहीं दूसरी तरफ उसे समाज का महत्वपूर्ण नागरिक बनाकर देश प्रेम की भावना उसमें पैदा करती है। षिक्षक ही वह प्रमुख स्तम्भ है जो अपने प्रयासों से किसी भी षिक्षा एवं उसके उद्देष्यों को सफल बनाते हैं। किसी भी राष्ट्र की षिक्षा प्रणाली में षिक्षक मेरूदण्ड का कार्य करता है। षिक्षक, बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाकर उन्हें समाज, राष्ट्र और विष्व के नागरिकों के रूप में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिये तैयार करता है। एक कुषल अध्यापक के लिए विषय ज्ञान के साथ–साथ उसमें अपने विषय के प्रस्तुतिकरण व अपनी बात को समझाने की कला में निपुणता होनी चाहिए। जो षिक्षक इस कला में दक्ष होगा, वही विद्यार्थी को स्वस्थ स्थायी अधिगम के लिये प्रेरित कर सकता है। षिक्षक की दक्षता विभिन्न षिक्षण कौषलों पर निर्भर करती है। विद्यार्थी के विचारों, मूल्यों अभिवृत्तियों एव संस्कारों के परिवर्तन एवं समय के सापेक्ष बनाने का दायित्व अध्यापक के कन्धों पर होता है, अतः बदलते परिवेष में, सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता बनाए रखने के दायित्व को षिक्षक अपने प्रभावी निर्देषन एवं मार्गदर्षन द्वारा सकारात्मक दिषा दे सकता है। साथ ही वैज्ञानिक अन्वेषणों विचारों से प्रभावित हो रहे समाज में सामयिक मूल्यों एवं आदर्षों को संरक्षित रखते हुए विकासवादी दषाओं में विद्यार्थी को व्यवस्थित एवं स्थापित बनाने में षिक्षक की जिम्मेदारी है।

### संवेगात्मक बुद्धि

बुद्धि के प्रचलित नवीन सम्प्रत्यय को संवेगात्मक बुद्धि कहा जाता है। जिस प्रकार बुद्धि जन्मजात होती है उसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि भी जन्मजात होती है। जिसका विकास अनुभव एवं परिपक्वता द्वारा होता है। जहाँ व्यक्ति की सामान्य बुद्धि, सामान्य परिस्थिति में कम या क्षतिग्रस्त नहीं होती है वहाँ संवेगात्मक बुद्धि का विकास एवं क्षति दोनों ही सम्भव है व्यक्ति जन्म के साथ ही भावनात्मक संवेदनशीलता, भावनात्मक स्मृति, भावनात्मक प्रक्रिया एवं भावनात्मक अधिगम जैसी योग्यताओं को साथ लेकर आता है। ये योग्यताएँ पर्यावरण से अनुक्रिया द्वारा प्राप्त अनुभवों एवं परिपक्वता के साथ विकसित होती है अथवा समाप्त हो जाती है। इनका विकास एवं क्षति दोनों ही पर्यावरण में व्यक्ति किस प्रकार अनुभव प्राप्त करता है, इस बात पर निर्भर करती है।

संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति में निहित वह क्षमता हे जिसके आधार पर वह अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझ पाता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को उसके संवेगों को उचित रुप में अभिव्यक्त करने की क्षमता प्रदान कर उसके व्यक्तित्व का विकास भी करती है। शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तित्व का विकास करना है, जिसमें संवेगात्मक बुद्धि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हे। संवेगात्मक रूप से सक्षम शिक्षक विद्यार्थियों को उचित रूप से अभिप्रेरित कर समय का सदुपयोग करना सिखाता हे तथा नेतृत्व क्षमता

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

का विकास भी करता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को सामूहिक रूप में अधिक प्रभावी ढ़ंग से कार्य करने में सहायता करती हे। सामान्य रूप से संवेगात्मक बुद्धि जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप में लाभदायक सिद्ध होती है।

**बालक के संवेगात्मक विकास में शिक्षक की भूमिका**

बालक के संवेगात्मक विकास में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका एवं योगदान होता है। बालक के उचित संवेगात्मक विकास के लिए शिक्षक को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

- बालकों में उत्तम रुचियाँ उत्पन्न करने के लिए अध्यापक को स्वस्थ सदों का सहारा लेना चाहिए, जैसे–आशा, हर्ष तथा उल्लास आदि।
- अध्यापक का कर्तव्य है कि अवांछित संवेगों; जैसे–भय, क्रोध, घृणा आदि का मार्गान्तीकरण या शोधन कर उन्हें उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित करे।
- पाठ्यक्रम निर्धारण में भी बालकों के संवेगों को उचित स्थान दिया जाए।
- अध्यापक को चाहिए कि वह बालकों को संवेगों पर नियन्त्रण रखने का प्रशिक्षण दें।
- वांछनीय संवेगों का यथासम्भव विकास करके बालकों में श्रेष्ठ विचारों, आदर्शों तथा उत्तम आदतों का निर्माण किया जाए।
- बालकों को संवेगों के आधार पर महान् तथा साहित्यिक कार्यों के लिए प्रेरित किया जाए।
- अध्यापक को चाहिए कि बालकों के संवेगों को इस तरीके से परिष्कृत करे कि उनका आचरण समाज के अनुकूल हो सके।
- वांछनीय संवेगों के माध्यम से छात्रों में साहित्य, कला तथा देशभक्ति के प्रति प्रेम उत्पन्न किया जा सकता है।
- संवेग द्वारा अध्यापक बालकों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित करके उनके मानसिक विकास में भी योग प्रदान कर सकता है।
- अध्यापक को सदा छात्रों के साथ प्रेम एवं मित्रता का व्यवहार करना चाए।
- अध्यापक को स्वयं संवेगात्मक सन्तुलन बनाये रखना चाहिए संक्षेप में, अध्यापकों का कर्तव्य है कि वे संवेगों के स्वरूप और विकास से भली–भाँति परिचित हों तथा शिक्षण कार्य द्वारा बालक में उचित संवेगों का विकास करें। प्रत्येक अध्यापक को यह ध्यान में रखना चाहिए कि संवेग विचार एवं व्यवहार के प्रमुख चालक अथवा प्रेरित शक्तियाँ हैं और उनका प्रशिक्षण एवं नियन्त्रण आवश्यक है।

**निष्कर्ष**

वर्तमान में शिक्षकों की भूमिका न केवल शिक्षा देने में होती है, बल्कि वे छात्रों के अध्ययन के दौरान उन्हें मार्गदर्शन देते हैं और उन्हें वास्तविक जीवन में समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। शिक्षक छात्रों को उनके संभवतः अधिक सफल भविष्य की ओर देखने में मदद करते हैं, जिसमें उनकी सोच को संवेदनशीलता और स्वतंत्रता से भरा रखा जाता है।

**सुझाव**

- आधुनिक युग में शिक्षकों को अपने छात्रों को न केवल अकादमिक दृष्टिकोण से समझना चाहिए, बल्कि उन्हें उनकी सामाजिक और आधारभूत जीवन कौशलों का भी संबंध समझना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने छात्रों के विकास को समझने और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करनी चाहिए।
- शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ एक गहरे संबंध बनाना चाहिए जो उन्हें उनके जीवन में महत्वपूर्ण बातों के बारे में समझने में मदद करता है।
- शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ अनुभव साझा करने चाहिए, जो उन्हें उनके सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास में मदद करते हैं।
- शिक्षकों को भी अपने छात्रों से सीखना चाहिए। वे अपने छात्रों से अलग–अलग परिस्थितियों में कैसे संबद्ध रह सकते हैं, कैसे संचार करते हैं और उन्हें कैसे समझते हैं, इन सभी बातों से सीख

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

सकते हैं।

**संदर्भ**


- एस.एस. माथुर (2006). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान.* इलाहाबाद : शरद पुस्तक भवन.
- श्रीवास्तव, डी.एन. एवं वर्मा, प्रीति (2006). *बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास.* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर.
- अस्थाना बिपिन (2007). *मनोविज्ञान और षिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन.* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर.
- पाठक पी. डी. (2009). *षिक्षा मनोविज्ञान.* आगराः अग्रवाल पब्लिकेषन्स.
- गैरेट हेनेरी ई. (2010). *षिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग.* नई दिल्लीः कल्याणी पब्लिषर्स.
- कुलश्रेष्ठ एस. पी. (2010). *षिक्षा मनोविज्ञान.* मेरठः आर लाल बुक डिपो.
- https://www.shodhpatrika.in/current/MrGDPsHJalAIqef.pdf
- https://ijcrt.org/papers/IJCRT2306784.pdf
- http://www.socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=5451
- https://codevidhya.com/influence-teachers-students/
- https://www.open.edu/openlearncreate/mod/oucontent/view.php?id=80162&printable=1


IAJESM
Quality Of Work... Never Ended...